पाप की कीमत मृत्यु है।

- परमेश्वर ने आदम और हव्वा को यह सिद्धांत दिखाया। वह सर्प शैतान के द्वारा जीवन की नकल करने का प्रयास हो सकता था।
- उसने निर्दोष जानवरों के खून को मनुष्यों के पापों के प्रायश्चित के रूप में इस्तेमाल करने की अनुमति दी।
- जानवरों के खून पाप को ढकने का एक साधन था, यह पाप को मिटाता नहीं था।
- उस भेष के पीछे भी पाप मौजूद था।
- यीशु मसीह यह सब बदल देंगे।

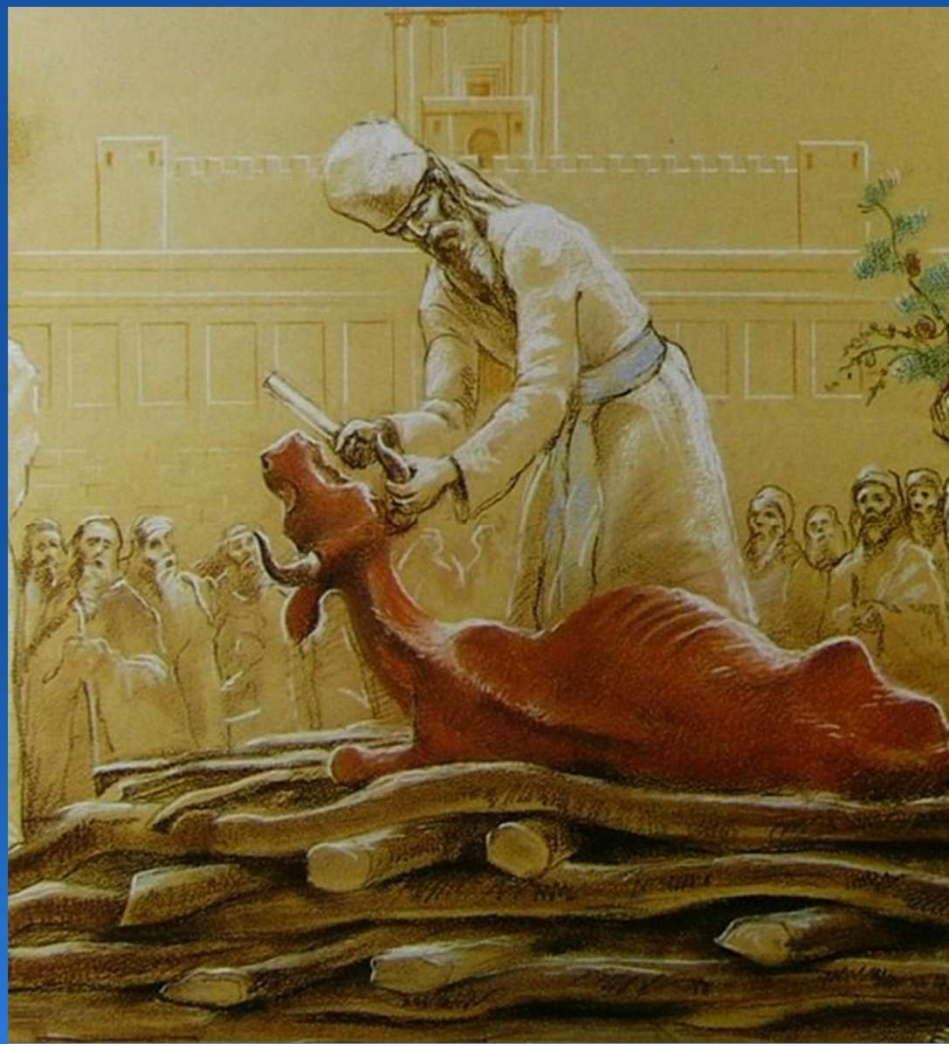

कैन ने हेवेल को मार डाला

- पहली दर्ज की हुई हत्या।
- पहला परिवार अभी भी अदन की भूमि में रह रहा था।
- परमेश्वर ने कैन को पूर्व दिशा में निर्वासित कर दिया।
- नोड = भटकते हुए, बेचैन
- कोल = कोई भी, कुछ भी या सब कुछ।
- अब तक पृथ्वी पर बहुत सारे लोग रह रहे थे।
- पितृसत्तात्मक समाज (पुरुष प्रधान) के कारण महिलाओं का उल्लेख नहीं किया गया।
- संभवतः पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या अधिक थी।

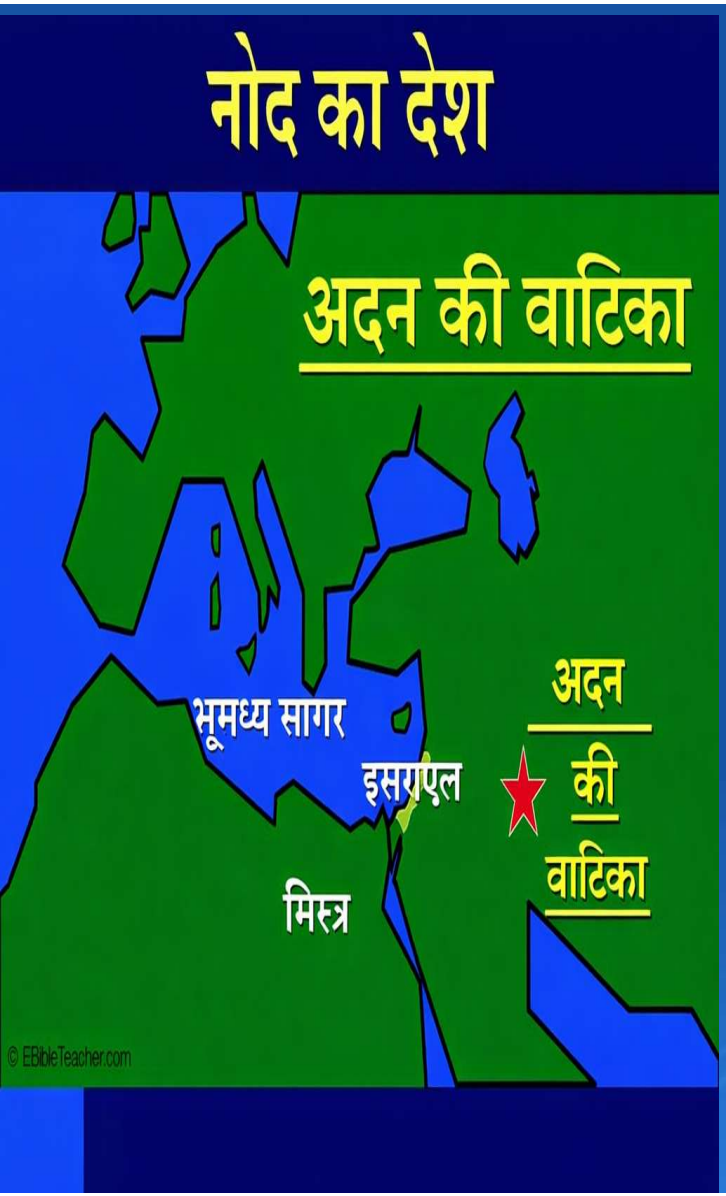

नोद का देश

- नोद, अदन की वाटिका के पूर्व दिशा में था।
- कैन पर एक चिन्ह रखा गया।
- इस पद का अर्थ यह भी समझा जा सकता है कि कैन स्वयं एक चिन्ह ठहराया गया था।
- नोद, कैन के लिए शरण का स्थान ठहराया गया।
- शरणस्थान वह स्थान होता था जहाँ कोई मनुष्य जिसने किसीको मार डाला हो, जाकर शरण लेसके और सुरक्षित रहे।

कैन दुष्ट लोगों की वंश-रेखा की शुरुआत है

- दुष्ट लोग वे माने जाते हैं जो परमेश्वर से मुँह मोड़ लेते हैं।
- लामेक, कैन की पाँचवीं पीढ़ी में से था।
- लामेक एक मनुष्य की हत्या करने की बात स्वीकार करता है और उस पर घमण्ड भी करता है।
- हव्वा ने एक और पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम शेत (शेत) रखा गया।
- शेत का अर्थ है "प्राप्त किया हुआ" या "परमेश्वर द्वारा दिया गया।"
- शेत भले लोगों की वंश-रेखा की शुरुआत करता है।
- भले लोग वे हैं जो **"यहोवा का नाम पुकारते हैं।"**

उत्पत्ति 5: शेत की वंशावली

- जब शेत का जन्म हुआ तब आदम की आयु १३० वर्ष थी।
- जब कायिन का जन्म हुआ तब संभवतः आदम अभी भी युवा था।
- आदम और हव्वा को परमेश्वर ने शारीरिक रूप से परिपक्व अवस्था में सृजा था।
- पहलौठा होना एक विशेष स्थान या अधिकार है, और बाइबिल की परिभाषा के अनुसार यह पुत्र होता है।
- लगभग निश्चित है कि उस समय स्त्रियों की संख्या पुरुषों की संख्या से कहीं अधिक थी।
- उस समय लगभग १५ वर्ष की आयु की युवती के लिए संतान उत्पन्न करना सामान्य बात थी।

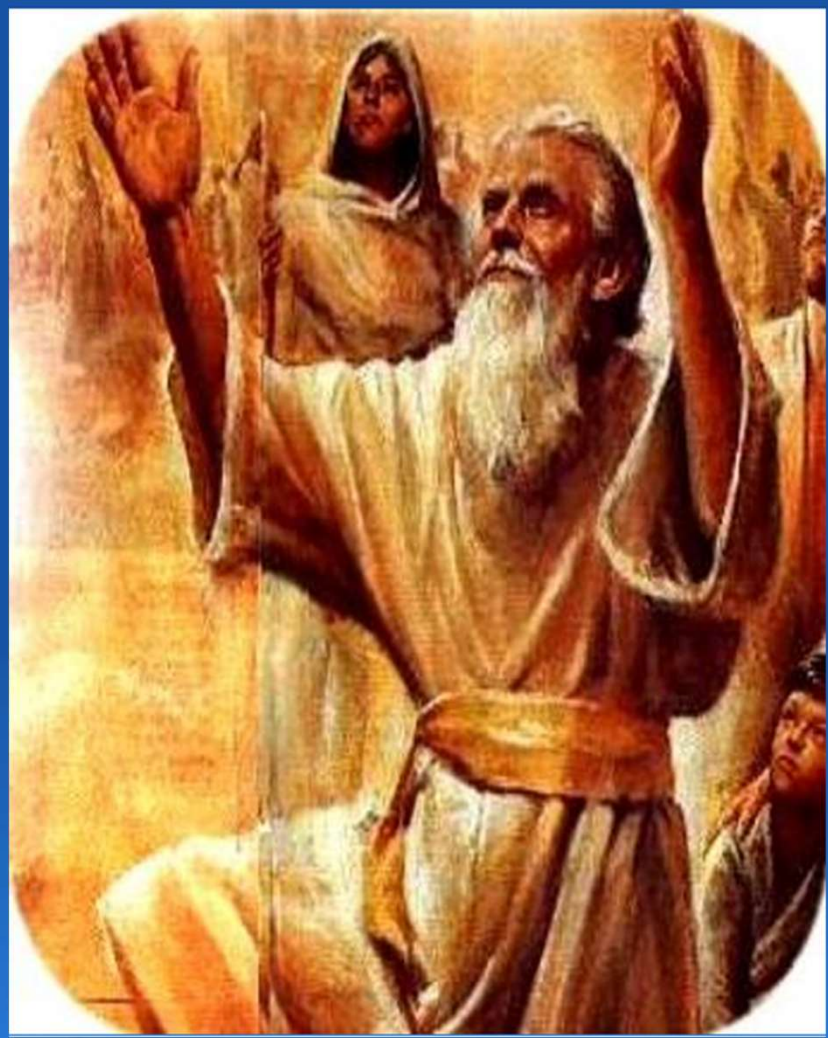

Slide 5

AS1 AD Singham, 3/5/2026

AS2 AD Singham, 3/5/2026

नूह शेत की वंश-रेखा में से था

- **हनोक ३६५ वर्ष जीवित रहा**, जो एक सौर वर्ष के दिनों के समान है।
- **नूह के पिता ७७७ वर्ष जीवित रहे**, और यह संख्या पूर्णता का प्रतीक मानी जाती है।
- **नूह के तीन पुत्र थे:** हाम, यापेत और शेम।
- जब नूह के पुत्र उत्पन्न हुए तब उसकी आयु ५०० वर्ष थी।
- संभव है कि इन तीन पुत्रों से पहले भी उसके बहुत से अन्य बच्चे हुए हों।

Slide 6

AS3 AD Singham, 3/5/2026

AS4 AD Singham, 3/5/2026

उत्पत्ति अध्याय ६

- **नफिलीम (N'filim)** = "परमेश्वर के पुत्रों" और "मनुष्यों की पुत्रियों" से उत्पन्न संतति।
- **बेनेई एलोहीम (Benei Elohim)** = परमेश्वर के पुत्र।
- **नफिलीम** का अनुवाद सामान्यतः **"दानव" या "महाबली पुरुष"** के रूप में किया जाता है।
- यह यूनानी शब्द **"गिगांते (Gigante)"** से आया है, जिसका अर्थ है **गिरे हुए, नाश किए गए, या नीचे गिराए गए।**
- एक ऐसा वंश जो अत्याचारी, विकृत स्वभाव के और दुष्ट प्राणी थे।

क्या नेफिलीम दैत्य थे?

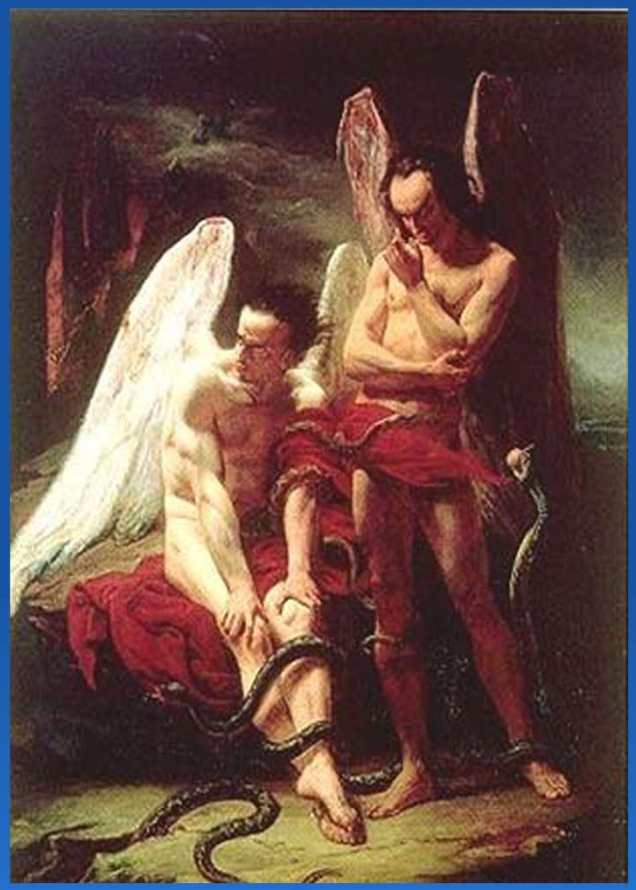

- परम्परा यह प्रचलित हुई कि वे "पतित स्वर्गदूत" मानव देह धारण करके आए।
- प्राचीन हिब्रूजन नेफिलीम को, अर्थात् "परमेश्वर के पुत्रों" को, शेत के वंशज मानते थे, जो भलाई की वंशावली थी, पवित्र रेखा थी।
- मनुष्यों की पुत्रियाँ दुष्टों की सन्तान समझी जाती थीं, कैन के वंश की, अधर्म की रेखा की।
- इसलिये भलाई और बुराई का संयोग हुआ, उनका मिलन हुआ, और उससे अशुद्धि तथा प्रदूषण उत्पन्न हुआ।

कैन के वंश तथा शेत के वंश को पृथक् रखा जाना था

- परमेश्वर का मूलभूत सिद्धान्त यह है कि भलाई को बुराई से पृथक् रखा जाए।
- परमेश्वर ने अन्त में इस्राएल को संसार से अलग करके पृथक् किया, कि वे उसके लिये पवित्र जाति बने, जो उसके लिये अलग रखी गई हो।
- नेफ़िलीम सम्भवतः एक "प्रतीक" हैंवे लोग जो स्वयं को बुराई के अधीन कर देते हैं।
- नेफ़िलीम की शक्ति का मूल स्रोत शैतान है।
- नेफ़िलीम के प्रकार (प्रकारान्तर): रपाईम, एमिम, अनाकिम, होरीम।

बाइबिल का प्रकारों का सिद्धान्त

- नेफ़िलीम सम्भवतः महाप्रलय की महान् जलप्रलय में नष्ट हो गए।
- पश्चात् उल्लेख सम्भवतः “प्रकारों” का है।
- नेफ़िलीम शब्द सामान्यतः दुष्ट शासकों के लिये, या क्रूर शत्रु योद्धाओं के लिये प्रयुक्त हो गया हो सकता है।
- गल्यत गत का निवासी था।
- गत अनाकियों द्वारा शासित एक ग्राम था।(यहोशू ११)
- पलिश्ती और अनाकी इसी प्रदेश में बसे हुए थे।

- पद ३ में परमेश्वर की आत्मा = रूह अथवा रूह हकोदेश। यही परमेश्वर का वह गुण है जो मनुष्य से व्यवहार करता है, मनुष्य के साथ संघर्ष करता है।
- ये १२० वर्ष पूर्णतः मनुष्यों की आयु के विषय में नहीं हैं।
- यह भी था कि परमेश्वर मनुष्यजाति को उनके दुष्ट मार्गों से फिरने के लिये १२० वर्ष और दे रहा था, अन्यथा वे नाश किए जाते।

एक अन्य मूलभूत सिद्धान्त: परमेश्वर धर्मियों को दुष्टों के साथ नाश नहीं करता

- परमेश्वर अपना क्रोध धर्मियों पर नहीं उंडेलेगा।
- तौभी वह धर्मी लोगों पर बुरी बातें घटने की अनुमति देता है।
- वह दुष्ट और भक्त दोनों पर बुराई आने की अनुमति देता है।
- वह सदा भक्तों को सतावों से आश्रय नहीं देता।
- किन्तु... वह अपने दिव्य न्याय को धर्मियों पर दुष्टों के साथ नहीं बरसाएगा।
- संकट (Tribulation) = मनुष्य की बुराई का अन्य मनुष्यों पर उंडेला जाना।
- परमेश्वर का क्रोध = परमेश्वर की अलौकिक विपत्तियाँ।
- महाप्रलय इस मूलभूत सिद्धान्त का पूर्ण उदाहरण है जो कार्य करता हुआ दिखाई देता है।

जहाज: परमेश्वर द्वारा रचित विश्वासियों के लिये सुरक्षित आश्रय

- पद ९ में नोह की कथा
- त्सद्दीक = धर्मी
- तामिम = सिद्ध
- शेम = नाम
- मेल्कीसिदक शेम ही हो सकता है (क्योंकि वह उस समय अभी जीवित था)
- शाचहत = भ्रष्ट

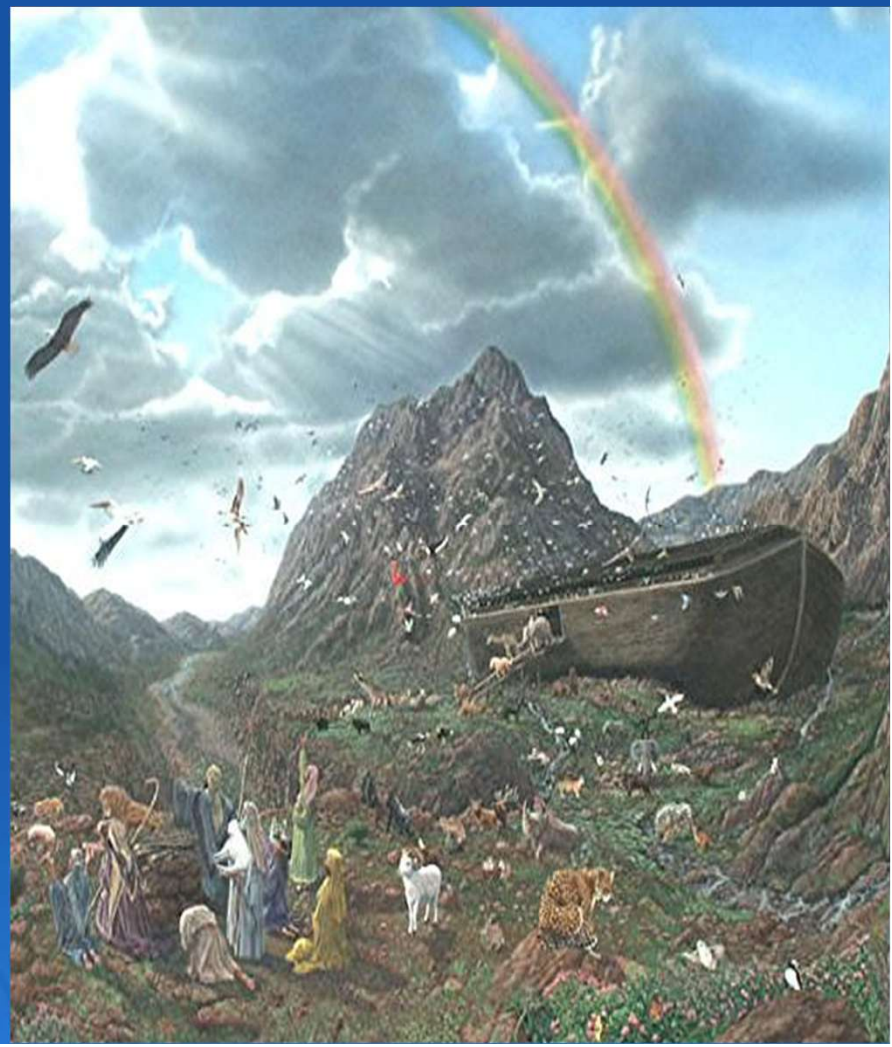

पद १३ में जीवित प्राणी, शैतान नहीं, पृथ्वी के भ्रष्टाचार के लिये दोषी ठहराए गए हैं

- बासार = मांस
- यह किसी भी जीवित प्राणी का अर्थ हो सकता है, पशु भी सम्मिलित हैं।
- आदम शब्द सामान्यतः "मनुष्य" अथवा "मनुष्यजाति" के लिये प्रयुक्त होता है, किन्तु यहाँ इसका प्रयोग नहीं हुआ है।
- क्या परमेश्वर ने बुराई की सृष्टि की? हिब्रू लोग कहते हैं "हाँ", किन्तु जिस प्रकार हम सोचते हैं, उस प्रकार नहीं।

भलाई और बुराई का इब्रानी दृष्टिकोण

१) मनुष्य को **भलाई की प्रवृत्ति** और **बुराई की प्रवृत्ति** दोनों के साथ सृजा गया।

२) आदि में परमेश्वर ने बुराई और भलाई दोनों की सृष्टि की।